पत्रिका
गर्भनाल
प्रवासी भारतीयों की मासिक ई-पत्रिका

गर्भनाल फिलिप मैगजीन

2021 Aug | 2021 Jul | 2021 May | 2021 Apr | 2021 Mar | 2021 Feb | 2021 Jan

Search

विस्मृति से सहसा प्रकट कविताएँ

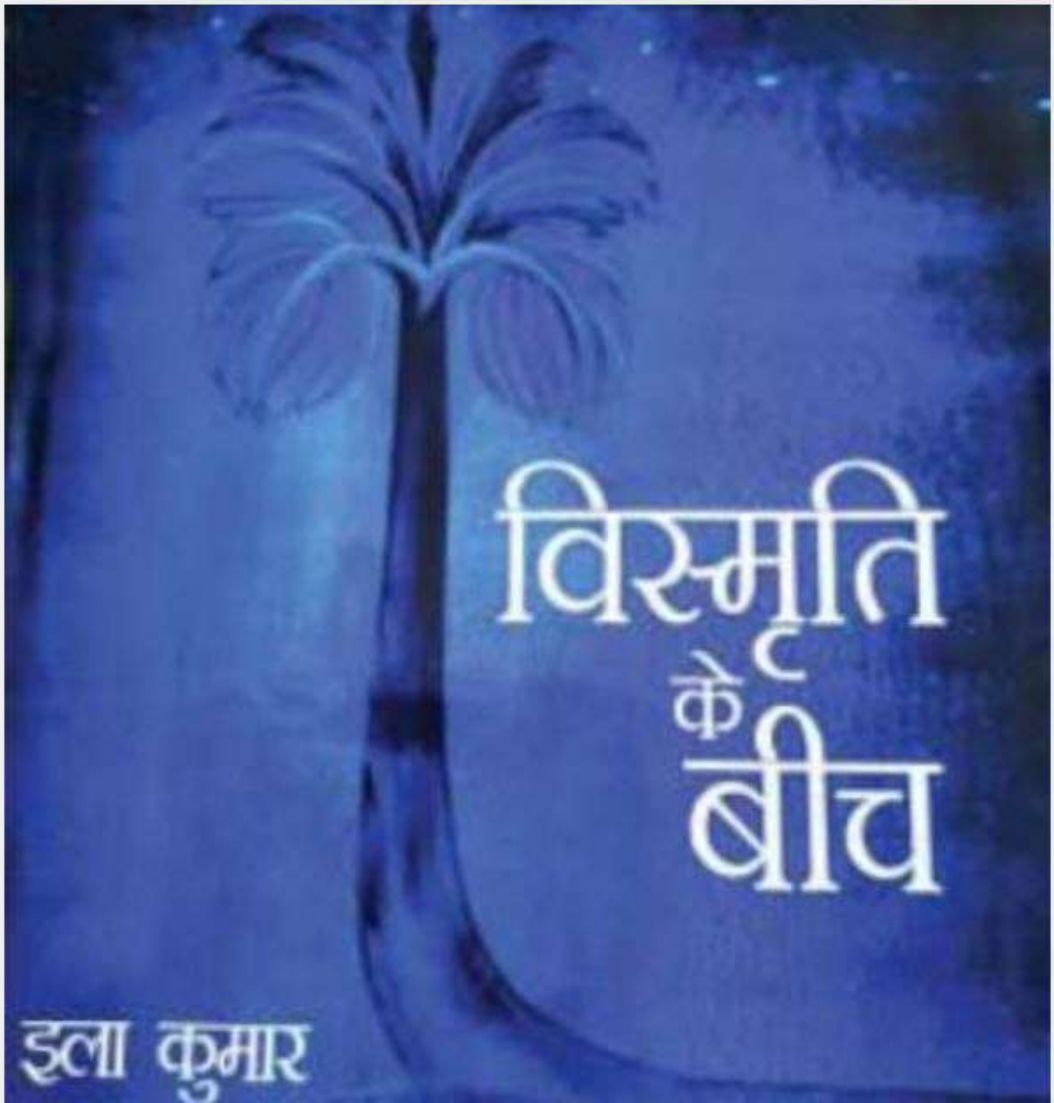

प्रभात कुमार राय
एमटेक, आईआईटी, खड़गपुर। हिन्दी और अंग्रेजी में सृजन। अनेक आलेख, रचनाएँ, संस्मरण, जीवनी, समीक्षा आदि प्रकाशित। अनेक वर्षों तक 'सन्मार्ग' में साप्ताहिक कालम का प्रकाशन। सम्प्रति - भारतीय रेल सेवा (इलेक्ट्रिकल इंजीनियर्स) से सेवानिवृत्त तथा, बिहार सरकार में पूर्व ऊर्जा सलाहकार। सम्पर्क : pkrai1@rediffmail.com

पुस्तकायन

विस्मृति से सहसा प्रकट कविताएँ

इला कुमार ने अपनी भूली-बिसरी कविताओं को लाकडाउन की अवधि में ढूंढ निकाला और उन्हें 'विस्मृति के बीच' कविता संग्रह के रूप में पाठकों को परोसा है। कोविड के क्रूरतम प्रहार ने हम सबों को अपने निवास में कैद रहने को विवश कर दिया था। वाह्य भौतिक जगत से संपृक्ति संवेदनशील व्यक्तियों की अंतः चेतना को झकझोरकर रचनात्मक प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख कर दिया था। ये विस्मृत- सी कविताएँ कवयित्री की स्मृति के किसी कोने में संचित रही।

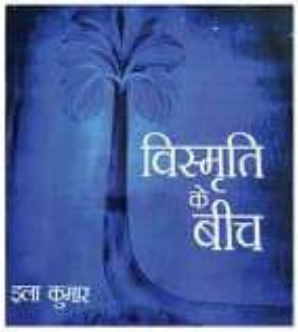

इला ख्यातिप्राप्त, वरिष्ठ और बहुआयामी साहित्यकार हैं ।इन्होंने गद्य-पद्य की विभिन्न विधाओं में प्रचुर लेखन किया है। लेखन में उनके मन की संवेदनशीलता स्पष्ट झलकती है ।इनकी कविताओं का माधुर्य प्रकृति के मनोहारी दृश्य की भांति सृजनात्मकता की सूर्य- रश्मियों से आलोकित होकर इंद्रधनुष के रूपरंगे प्रभाव से पाठक को विस्मित कर देती है। प्रस्तुत कृति में 67 कविताएँ हैं जिनमें वैविध्य होते हुए भी काव्य चेतना के स्तर पर ऐक्यानुभूति की भावधारा प्रवाहित हुई है। भाषाई संप्रेषणीयता , प्रांजलता, परिपक्वता , शब्दों का सटीक एवं किफायती इस्तेमाल तथा मानवता के प्रति चिंता इनकी रचनाओं को जीवंतता प्रदान करती है।

इन कविताओं में धर्म, दर्शन, नए सत्य एवं नव्य भावों का समावेश उन्हें विशिष्टता प्रदान करता है ।उपनिषद, योगवशिषट आदि का ज्ञान तथा कविताओं में उनके सूत्र-वाक्यों का समावेशन कवयित्री की सुदृढ़ प्रासंगिक पकड़, मार्मिकता और समग्र जीवन दृष्टि का द्योतक है। इस संग्रह में कुछ कविताओं की लौ ऊर्ध्व दिशा में है। दृष्टि और गोचर की परिधि को लांघकर कवयित्री की कलम अनंतता के किनारे विचरण करने को बेताब प्रतीत होती है। कविताओं का समाप्ति अंश बहुधा निष्कर्षपरक है; कुछ कविताओं के अंत में प्रश्न छोड़ दिया गया है जो सचमुच विवेकपूर्ण है। कविता की हर पंक्ति में स्पष्ट चित्र का उगना कवयित्री की प्रतिभा संपन्नता का प्रमाण है ।

कवयित्री ने 'कुछ शब्द' में स्वीकारा है कि कविता रचने की प्रेरणा उन्हें अनायास मिलती है। प्रेरणा का स्पर्श सत्कविता की असली पहचान है। कवयित्री रचना तभी करती हैं जब उनके अंदर अनुभूतियाँ स्वतः अभिव्यक्ति खोजने लगती हैं। जहां-जहां शुद्ध अनुभूति केवल कौंध कर चली गई है , कविता लघु हो चली है क्योंकि वह देर तक शब्दों में विहार नहीं कर पायी है। राष्ट्र कवि दिनकर ने कहा है कि दृष्टि, हृदय और विचार कविता के निश्चेष्ट (पैसीव) माध्यमहैं। दरअसल आध्यात्मिक कविता की रचना आत्मा करती है और आत्मा ही उसका ग्रहण और आसूबादन भी करती है। श्री अरविंद वर्णय वस्तु की आत्मा को उद्घाटन करने की क्षमता को कविता की कसौटी मानते थे। उनके अनुसार आत्मा की अनुभूति का चित्रण ही असली काव्य है। बाह्य जगत में हम जो कुछ देखते हैं उसका सुरुचिपूर्ण वर्णन आसान है पर समाधि के मूल में बसने वाली आत्मा को अपना वर्णय विषय बनाकर कविता रचना अत्यंत दुरूह होता है ।

इला कुमार की कविताओं में कई जगह सूर्य हैं और सूर्य प्रत्यक्ष देव हैं तथा सनातन परंपरा में सारे जगत के ऊर्जा के स्रोत, जन्मदाता, पालक और रक्षक हैं। निरंतर गतिमान रहना, नित्यता को कायम रखना तथा नित्य नूतन हो-होकर बारम्बार दैदीप्यमान रहना, ये सारे सूर्य के गुण, कार्य और आचरण है। इन्हीं गुणों तथा दिव्य प्रकाश भाव से प्रभावित होकर कवयित्री अपनी प्रथम कविता 'हे सूर्य!' में अपनी वंदना निवेदित करती है। 'सूरज की छाती पर खिंची दीवार',' मैं सूर्य पी रहीं हूँ', 'अपार आदर', 'प्रवृत्तियों के घेरे में', 'मायावी जाल', 'काले सूर्य की परछाई', 'सागर तट की खुली सतह', 'आज मैंने समुद्र देखा', 'दिव्य खेल', 'गर्भ-गृहः दो कविताएँ', 'शाम अब उतर आई' , 'सन्नाटा' ,

'(संभावनाओं का सूरज / डूबने को / क्यों है तत्पर)/' आदि कविताओं मे सूर्य विद्यमान है।

ध्यातव्य है कि कवयित्री विज्ञान की छात्रा रही हैं। पदार्थ विज्ञान में 'प्रकाश 'एक महत्वपूर्ण विषय होता है। अतः कविताओं में परावर्तन, विकिरण, थर्मस ,इंद्र धनुष, रश्मि, किरण आदि का प्रयोग स्वाभाविक है ।

कवयित्री की इन पंक्तियों पर गौर कीजिए : 'अच्छाइयों को/तथ्य की तरह/ क्यों का कारक-कारण/ और अकार-नकार है कोई?/वह है कर्मफल/कारक भी, कारण भी और/ अकारण भी/महत्वपूर्ण/कारक में/पीछे प्रारब्ध निहारता है/'

जार्ज रसेल कविता को रचनाकार के व्यक्तित्व की स्वाभाविक द्युति मानते थे, उन्होंने लिखा है : 'जिस ग्रंथ में मुझे सर्वाधिक ज्ञान मिला है (भगवद्गीता) उसकी शिक्षा है कि कर्म की प्रेरणा हमारे कर्म में ही निहित होना चाहिए। कविता रचने और चित्र अंकित करने की मूल प्रेरणा यही होनी चाहिये कि रचना के समय हमें आनंद की प्राप्ति होती है। हमें कविताएँ तो उसी स्वाभाविकता से लिखने चाहिए जिस स्वाभाविकता से वृंतों पर फूल खिला करते हैं' और कवयित्री ने लिखा है: "कविता लिखना मेरे लिए उपासना की तरह है - एक नितांत निजी कार्य'।

कवयित्री की कविताओं में शुद्ध रहस्यवाद की भी पुट है: 'गुच्छियों में लिपटी गुच्छियां/ शून्य अंधेरे के बीच/ बत्तियां रोशनी के अंदर/निरूत्तरता के बीच छिपे उत्तर की तलाश में लगे रहे/ पंक्तियों के पीछे पंक्तियां/उनके भी पीछे पंक्ति आकार लेने लगी/ अंधेरा/ बत्ती के इंतजार में/ शहर हवा औररहस्यों/ के बीच आकाश बना हुआ/' - यह एक जागृत आत्मा की अदम्य इच्छा का प्रतिरूप है जो प्रत्येक आवरण को हटाकर उसके परे देखना चाहती है।

ये कविताएं अपने आत्म में प्रवेश करने का विस्मयकारी निमंत्रण देती हैं ।

कविताओं में काम की लौ भी ऊपर की तरफ दिखतीं है और इसे कवयित्री मर्यादित ऊंचाईयों की ओर ले जाना चाहती हैं। बानगी के तौर पर :

'कामदीप्त वाक्यों का जादू/ मन को ऊंचाइयों पर ले/ जाकर वहीं रोक देता है/ अस्पर्शित बाहों के घेरे की तमन्ना/ थमने नहीं देती/ उन्हीं मृदुल भंगिमाओ के आगे/तुम ही हो वह पड़ाव'

इन पंक्तियों से उपमा की श्रेष्ठता का भान होता है: 'विशाल कछुए की अनंत बहती पीठ की तरह/ निर्विकार/'

प्रकृति चित्रण की पराकाष्ठा देखिए : 'कलम की नोंक/ छू लेना चाहती है/चीड़ की फुनगी को'/

'पहाड़ की ऊंची चोटी पर/ काफल वृक्ष खड़ा है/'

'ऐ शहर', स्टेट एन्ट्री रोड', 'सिकंदरा रोड पर', 'धनोल्टी: कुछ कविताएँ', 'चिरोकी गाँव: कुछ कविताएँ' में कवयित्री ने स्थानीयता को वृहत् आयाम दिया है तथा अनुभूतियों को सहज और सारगर्भित अभिव्यक्ति।

कवयित्री द्वारा स्त्री के वजूद को लेकर सवाल उठाया जाना लाजिमी है - 'स्त्री: तीन कविताएँ', 'क्या चाहती है स्त्री', 'वह सोचती है' आदि कविताओं ने कई निरूत्तरित प्रश्नों को उठाया है जो जवाब ढूंढता है। सामाजिक प्रतिकूलताओं और विडंबनाओं और तथाकथित विकास जिसमें मूल्यों का ह्रास हुआ है उसका बेबाक चित्रण, 'झूठे लोग', 'गैरजिम्मेदराना वाक्य' आदि कविताओं में व्यंजित हुआ है। मनुष्यता के मर्म पर आघात के प्रति कवयित्री अत्यंत संवेदनशील हैं।

कविताओं में गूढ़ अर्थ समाहित हैं। संग्रह की अधिकांश कविताएँ पाठक से एकाग्रता और रुक-रुक कर पढ़ने की अपेक्षा रखती है। दिनकर जी ने कहा है कि विज्ञान स्थूलता की कला है। किंतु कविता वस्तुओं के सूक्ष्म रूप का मूल्य ढूंढती है, वह उनके उन पक्षों का विश्लेषण करती है, जो गणित की भाषा में व्यक्त नहीं किए जा सकते। और चूंकि बुद्धि भी गणित को छोड़कर अन्य भाषा समझ नहीं सकती; इसलिए कविता अपने विश्लेषण का परिणाम बुद्धि नहीं, बल्कि हृदय के सामने निवेदित करती है क्योंकि हृदय उन संकेतों को समझ सकता है, जिनके माध्यम से कवि अदृश्य और अनिर्वचनीय का वर्णन करता है'।

इला जी की कविताएँ हृदय से उद्भूत होती प्रतीत होती हैं। अतीत और वर्तमान, परंपरा और नव्यता तथा मनुष्य और प्रकृति के बीच कवयित्री की समन्वयात्मक दृष्टि उनकी कविताओं में परिलक्षित होती है। बिंब प्रधान, प्रतीकात्मकता, रूपक एवं उपमाएँ मनोहारी हैं। रचनात्मक कौशल एवं बोधगम्यता के कारण कविताएँ प्रभावी और मर्मस्पर्शी हैं। कविताओं का विषय वैविध्य कवयित्री के व्यापक दृष्टिकोण और समष्टिगत चिंतन को रेखांकित करता है।

कवयित्री ने 'कुछ शब्द' के अंत में लिखा है : 'शेष पन्नों की खोज में हूँ, वे भी मेरी प्रतीक्षा में हैं।' यक़ीनन पाठकों को भी उन सभी रचनाओं का इंतजार है जो अभी भी विस्मृति की ओट में छिपी हैं। ■

विस्मृति के बीच (कविता संकलन)
कवयित्री : इला कुमार
प्रकाशक : डायमंड पाकेट बुक्स (प्रा.) लि.
ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-2,
नयी दिल्ली 110020, मूल्य - 350/-